CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्री ॥

॥ प्रश्नकुतूहलः ॥

श्री स्वामि पंडित हरदयालु शर्म्मा विरचितः ।

भाषार्थ सहितः ।

यह अद्भुत प्रश्न विद्याका ग्रंथ (प्रश्न कुतूहल) नाम जिसको श्रीस्वामी हरदयालुजी शर्माने दीन ब्राह्मणों के उपकारार्थ छन्द तथा ज्योतिष वेद स्वर न्याय वेदांत केवल आदि शास्त्रों को मथन करके ईश्वर की कृपा से नवीन युक्ति के साथ बनाया और भाषा किया ।

जो इसको पढैगा वह बहुत द्रव्य पावैगा क्योंकि इसमें मूक प्रश्नकी बहुत सुगम रीतिहै ।

जिसको
पं० प्रयागदत्त शर्म्मा की आज्ञानुसार
बाबू किशनलाल ने
अपने "बंबई भूषण" प्रेस मथुरा में
छापकर प्रकाशित किया ।

इसका सर्वाधिकार प्रकाशक के आधीन है ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अथ प्रश्न कुतूहलो लिख्यते।

मंगलके साथ (प्रश्न कुतूहल=प्रश्न विद्याका ग्रन्थ) लिखा जाता है ॥

अथ तपस्विनां भूदेवानां दीनगृहिणां निमित्तं द्रविण साधन ग्रन्थ शिव कृपया कर्म्मः ।

भावार्थः—अब तपस्वी दीन ब्राह्मणों के अर्थ धनका साधन करने वाला ग्रन्थ शिवजी की कृपा से करते हैं ॥

॥ शार्दूल विक्रीडितं छन्द ॥

श्री साम्बं प्रणिपत्य कम्बु धवलं लम्बोदरं बुद्धिदं । शृंग्याख्यं ह्यनुभृंगि कीर्ति बदनं नन्दीश्वरं कामदम् ॥ दीनानां धनदं महेश कृपया ग्रन्थकरो मीष्टदं हृद्यं क्षेमकरं विचार्य्य मनसा सत्यं सतां श्रेयसे ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाषार्थ—मैं शंख के सदृश शुक्ल वर्ण वाले श्री पार्वतीजी के सहित महादेवजीको और अष्ट सिद्धियों के दाता गणेशजी को तत् पश्चात् शृंगीगण और भृंगीगण तथा कीर्त्ति मुख और कामनाओंके देनेवाले नन्दीगण को प्रणाम करके महादेवजी की कृपा से मनोरथ का देनेवाला क्षेमकारी मनोहर ग्रन्थ मनसे विचार के सज्जनों के कल्याण के लिये करता हूं १ ॥

शृण्वन्तु सर्वे संसारे द्रविणेन बिना
किमपिकार्यंन सिद्धयति अतो वाङ्मयं
साधनं समाश्रित्य विद्वान् विहरेत्सर्वत्र ।

भाषार्थ—सब सुनों संसार में धनके बिना कुछभी काम सिद्ध नहीं होता इसलिये वाणी मय शास्त्र के साधन का सहारा लेकर विद्वान् सब स्थानोंमें विचरे ॥

तत्साधनन्तु वृत्तरत्नाकरस्य संज्ञा
ध्यायेविहितम् । तस्मादत्र लिख्यते ॥

भाषार्थ—वह साधन तो वृत्तरनाकर नाम छन्दो ग्रंथके संज्ञा अध्याय में है । वहां से यहां लिखा जाता है ॥

॥ प्रश्न करण विधिः ॥

जब प्रश्न करता आवे और बोले तब जैसे अक्षर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वह बोले वैसेही एक सलेट पर वा स्याहीसे लिखले फिर उत्तर दाता प्रणव का उच्चारण कर प्रश्न कहन का आरम्भ करै जैसे किसीने कहा। मेरा प्रश्न आप कहिये। इस वाक्य में। मगण जगण और सगण हैं इसका फल कहना गणोंको देखकर ॥ वह गणबिधि आगे देखो।

स्यरस्त जभ्नगै र्लान्तैरे भिर्दशभिरक्षरैः।
समस्त वाङ्मयं व्याप्तं त्रिलोक्य मिव-
विष्णुना ॥ १ ॥

अस्यायमर्थः। यथा बिष्णुना व्यापकेन परमेश्वरेण त्रैलोक्यं व्याप्तम् तथैव मगण यगण र,स,त,ज,भ,न, गुरु लघुभिर्दशभिरक्षरे समस्त वाक्रूपं शास्त्रं व्याप्त मिति अतएतेषां दशानांविभागे नव प्रश्नकर्तुःप्रश्न स्योत्तरं वक्तव्य मिति। कस्माद्य श्चैतस्य परमात्मास्ति तस्मादुद्भूत मिदं सर्वं जगद्वर्त्तते तत्सत्यं,तस्मात्स-त्यात्सत्य शब्दस्ये वोत्पत्ति भवति। गणैश्च फलमिव ज्ञेयम् ॥

॥ गणों की पहचान ॥

भावार्थ—इसका यह अर्थहै। जैसे विष्णु-व्यापक परमेश्वर से तीनों लोक व्याप्तहैं बैसेही मगण,यगण, रगण तगण जगण भगण नगण गुरु और लघु।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इन दश अक्षरों से समस्त बाणीरूप शास्त्र व्याप्तहै। इस लिये इन दशों के विभाग सेही प्रश्न करनेवाले के प्रश्न का उत्तर कहना चाहिये। क्योंकि जो चैतन्य परमेश्वर है उसी से उत्पन्न हुआ सारा जगत् है और वहसत्यहै उस सत्य से सत्य शब्दकीही उत्पत्ति होतीहै। गणों से फल जानना चाहिये॥

तद्यथा। मोभूमिः श्रियमातनोति
यजलं बृद्धिं रवन्हिं भृतिंजः सूर्यो रुज.
कादधाति बिपुलं भेन्दुर्यशो निर्म्मलं
सोवायुः परदेश दूरगमनं तव्योम शनयं
फलम् नोनाकः सुखमच्युतं प्रकुरुतेप्राहु
र्गणानां वुधाः॥ ६॥

भाषार्थ—सोऐसें। मगण का भूमि देवताहै और यह लक्ष्मी का विस्तार करता है यगण का जलदेवताहै धन सन्तानादि की बृद्धि देनेवाला है। पगण का अग्नि देवता मृत्युका दाता है जगण का सूर्य देवता और वहुत रोगका दाता है। भगणका चन्द्रमा देवता है और निर्म्मल यशका दाता है। सगण का वायु देवता और परदेश गमन का दाता है। तगण का आकाश देवता, और सौख्य का दाताहै

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नगण का स्वर्ग देवता और अखंड सुखका दाता है। पंडित ऐसाफल कहते हैं ॥

प्रश्नतन्तुः ।

यदि प्रश्न कर्त्तुरुच्चारणे त्रयोगुरुवस्तदा मगणो ज्ञेयः । तस्यफलम् । श्रियमात्तनोति कोर्थःलक्ष्मी सिद्धि श्रियमातनोति विस्तारयतीत्यर्थः । एवं अन्येषामपिगणानाफलं बोद्धव्यम्—

॥प्रश्न निकालने की रीति ॥

भाषार्थ—यदि प्रश्न पूछने वाले के बोलनेमें तीनगुरु अक्षर हों तव मगण जानना । उसका फल लक्ष्मी प्राप्ति होती है । ऐसेही और गणों का फल जानना चाहिये ॥

यगणेन धन सन्तानादीनां वृद्धि र्वाच्या नेनमृत्यु मुपदिशेत् तेनपरदेशगमनम् तेन शून्यंफलं । जेनरोगं प्रवदेत् । भगणेन निर्म्मलंयशो ब्रूयात् । नगणेनाऽखण्ड सुखमिति ॥गुरुणागुरु लघुना लघुकार्य प्रवदेत् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाषार्थ–यगण से धन सन्तान आदिकी वृद्धि कहनी। रगण से मृत्यु रोगका प्रश्न कहना। सगण से परदेश की यात्रा का प्रश्नका कहना है। तगणसे खाली प्रश्न कहना। जगण से रोगका प्रश्न भगणसे स्वच्छ यशका प्रश्न कहना। नगण से अखंड सुख कहना। गुरुसे गुरु कार्य। लघुसे लघुकार्य कहना॥

तेषां गुरु लघुरूपमाह। आदिमध्या वसानेषु भजसा यान्ति गौरवम्। यरता लाघवं यान्ति मनौतु गुरु लाघवम्॥ यथा ऽग्रे। म ऽऽऽय। ऽऽर ऽ।ऽस॥ऽत ऽऽ। ज।ऽ। भ ऽ॥ न॥। *मात्रान्तानां पृथिव्यादीनि पञ्च भूतानि यथा संख्ये नज्ञेयानि। जेन तमो भेन सतो नेन रजोग्रहणम्। त्रयाणां गीतोप निषद्भिः फलम् वाच्यम्॥

भाषार्थ–उनगुरु. औरलघु. अक्षरोंका स्वरूप कहते हैं भगण. जगण. सगण ये आदि मध्य अन्त में गुरुहैं। और यगण रगण तगण ये लघु होतेहैं। और मगण. सर्व गुरु. तथा नगण. सर्व लघुवाला होताहै। जैसे आगे हैं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

म ऽऽऽ य । ऽऽ र ऽ । ऽ स ।। ऽ त ऽऽ । ज ।ऽ। भ ऽ।। न ।।। + मगण से तगण तक पृथिवी. जल. अग्नि. वायु, आकाश, यथा संख्या जानना । जगण से तमोगुण । भगण से सतोगुण, नगण से रजोगुण ग्रहण करना ।। पिछले तीन गणोंका फल गीता और उपनिषदोंसे कहना । क्यों कि गणों के स्वभाव गीता आदि में भली भांति कहे हैं ।। और सतोगुण का फल शांति रजोगुण का बडे २ काम करना । तमोगुण का फल क्रोध आदि जानना ।। इति प्रथम परिच्छेदः ।।

।।अथ बलाऽबल विचारार्थं प्रश्न सिद्धान्त चक्रम्।।

०	म	य	र	स	त	ज	भ	न	गणाः
०	ऽऽऽ	।ऽऽ	ऽ।ऽ	।।ऽ	ऽऽ।	।ऽ।	ऽ।।	।।।	लघुगुरुवः
०	भू	ज	ते	वा	आ	तम	सत्त्व	रज	गुणतत्त्वानि
०	स्थिर	चर	चर	चर	स्थिरः	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	स्वर. स्थिर. द्विस्वभावाः
०	स्त्री	पुरुषः	पुरुष	नपुंसक	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्रीपुरुषादि संज्ञा
०	मूल	जीव	धातु	जीव	ब्रह्म	जीव	जीव	जीव	चिन्ता
०	मित्र	भृत्य	शत्रु	शत्रु	सम	सम	भृत्य	मित्र	मित्रादि संज्ञा
०	पीत	श्वेत	रक्त	हरीत	नील	ईषत रक्त	श्वेत	ईषत रक्त	रंगाः
०	पूर्व	पश्चिम	अग्नि	वायव्य	ईशान	उत्तर	दक्षिण	नैऋत	दिशा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ द्वाभ्यां २ गणानां फलम् । द्वाभ्यां मित्रगणाभ्यां कार्य सिद्ध मित्रलाभोभवेत । मित्र सेवकाभ्यां गोत्रपीडा स्यात् इति मित्रगण प्रक्रिया । भृत्यमित्राभ्यांसकलकार्य सिद्धिः द्वाभ्यांभृत्याभ्यांसर्वे । भृत्य शत्रुभ्यां मित्रशत्रुर्भवेत् त्यसमाभ्यांधनस्यनाश इति भृत्यगण प्रक्रिया फलम् । शत्रु मित्राभ्यां अति पीडा । शत्रु सेवकाभ्यां स्त्रियनाशः तदङ्गे पीडाच । द्वाभ्यां शत्रु गणाभ्यांभृत्यचहानिर्जानीयात्शत्रुसमाभ्यांसुखस्य नाशः ॥ इति शत्रुगण प्रक्रिया ॥द्वौ सननिष्फलौ भवतः । समभित्राभ्यां तुच्छफलम् ॥ समानु चराभ्यां स्वामिनां उदासीनता । समारिभ्यां विरोधः । पति समगण प्रक्रिया फलम् ॥

भापार्थ —अब कार्य सिद्ध होगाकि नहीं इस विचार के लिये दो २ गणों का फल कहते हैं ॥ प्रश्न के उत्तर देने वाले को चाहिये कि पूर्वोक्त चक्रमें

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मित्रादिसंज्ञा देखके उत्तर दे । यदि प्रच्छक बोले हुए वाक्य में दो मित्र गण पडैं तो कार्य सिद्ध और मित्र लाभ होय यह उत्तर कहना । और मित्र सेवक गणपडैं तो कार्य जीतके साथ सिद्ध हो ॥ यदि मित्र शत्रु दो गण प्रच्छक के कहे हुए अक्षरों में आवें तो उसके किसी प्यारे बन्धु का नाश होय । मित्र तथा समगणों से गोप अर्थात कुटुंब में किसी को पीडाहो यह दोर मित्र गणों का फल है ॥ भृत्य संज्ञक और मित्र संज्ञावाले गणों से सर्वकार्य सिद्धि कहनी । और दो भृत्य गणों से सब वश में आजाते हैं । भृत्य और शत्रु से मित्र भी शत्रु होजाता हैं । भृत्य और समसे धनका तथा कार्यका नाश होता है । यह भृत्य गणों का फल है । पहिले शत्रु गण और उसके आगे मित्रगण आवे तो वहुत पीडा कष्ट हैं ऐसा कहना । और शत्रु और सेवक से स्त्री का नाश हो और और प्रच्छक की स्त्रीको पीडा कहनी । दो शत्रु गणों से प्रत्यक्ष हानि जाननी । शत्रु और समगण से सुख का नाश कहना । यह शत्रु गण की प्रक्रिया पूरीहुई दोसम निष्फल होते हैं सम और मित्र से थोडा अर्द्ध लाभ वा कार्यहोता है । सम और भृत्य से स्वामी की उदासीनताहोती है । सम और शत्रुसे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आपस में विरोध होता है । इति समगण प्रक्रिया फलम्—

मनौ मित्रे भयौ भृत्यौ सरौशत्रु जतौ समौ ॥

भाषार्थ—मगण, नगण की मित्र संज्ञा है । भगण यगण दोनों भृत्य हैं । सगण रगण की शत्रु संज्ञा है जगण तगण इनका सम संज्ञा है ॥ इति ॥ ऐसे प्रश्न को सिद्ध असिद्ध कहना ।

मया भ्यां कार्य सिद्धिस्या द्रेन मृत्युः समादिशेत् । सेनक्षेयो विजानीयात् तकारान्निष्फलं वदेत् ॥

भाषार्थ—मगण यगण से कार्य सिद्ध होय । रगण से मृत्यु कार्य नाश हो । सगणसे क्षय जानना । तगण से निष्फल कार्य होय ।

अथ चिन्ता ज्ञानम् ।

प्रष्णाक्षरेषु मुख्यतया आदिमे नैवगणे न चिंता ज्ञानं सम्यग्भवति । मगणे मूल विज्ञानं यगणे जीव चिन्तनम् । रेनधातुं वदे द्धीमान् सेन जीवं विचिन्तयेत् । तेन शून्यं फलं वाच्यम् ह्यथवाब्रह्म

Kirtikant Sharma Collection, Rajaigarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चिन्तनम् जगणे रोगशोकार्त्तः प्रश्नकर्त्ता सदा भवेत् । भगणेन यशः स्वच्छं नेन श्रेयो विनिर्दिशेत् ॥ इति मूकः ॥

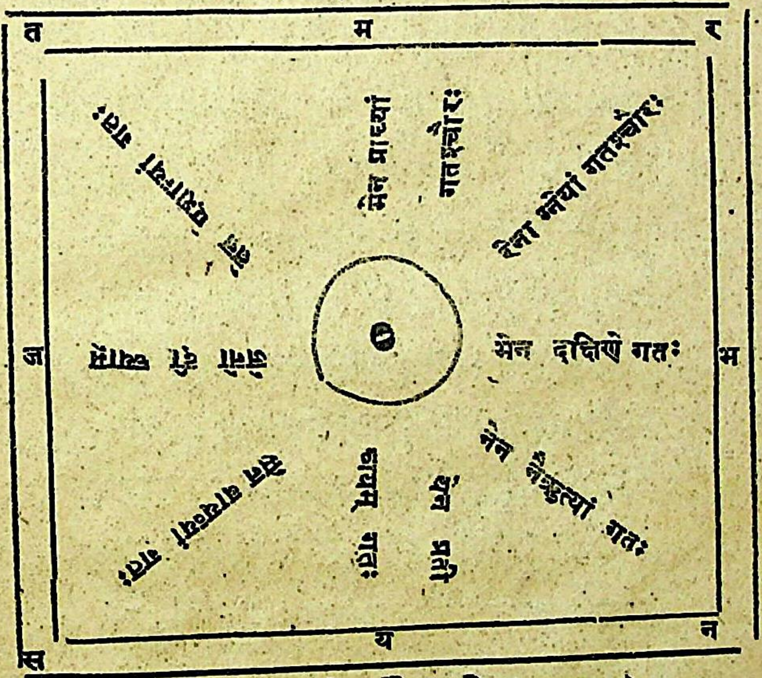

उक्त चक्रेण निधि चौरादयो द्रष्टव्याः ।

अथ चिन्ता ज्ञान कहते हैं ।

भाषार्थ—प्रश्न कर्त्ता के वाक्यमें मुख्यता करके पहिले ही गण से चिन्ता ज्ञान भली भांति से होता है मगण से मूल प्रश्न कहना । यगण होने पर जीव चिन्ता । रगण से धातु प्रश्न कहे बुद्धिमान । सगण से जीव चिन्तन कहना । तगण से शून्य फल खाली प्रश्न कहना अथवा जीव चिंतन ब्रह्म चिन्ता कहना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जगण से पूछने वाला रोग और शोक से पीडित कहना। भगण से जीव प्रश्ण और यश चाहने वाला स्वच्छता से कहना। नगणसे मूल प्रश्न और कल्याण कहना ॥ इति मूकः ॥

इस चक्र से खजाना और चोरका गमन कहना कि किस दिशा में गया है।

अथ लाभा लाभ विचारः। मनभये भ्यो लाभं ब्रूयात्। रसतजेभ्यो ऽलाभं जानीयात्। मनाभ्यांदिने लाभम्। भया भ्यां रात्रौ। जराभ्यांदिने हानिः। सता भ्यां रात्रौहानिः॥ अत्रदिन शब्देन कृष्ण पक्षोपिग्राह्यः रात्रि शब्देन शुक्ल पक्षः लाभाऽलाभ विचारः॥

भाषार्थ——अथ लाभ और अलाभका विचार यह है। म-न-भ-य–इन चार गणों के आने से लाभ कहना र-स-त-ज-इनसे अलाभ कहना। मगण नगण से दिनमें लाभ कहना भगण यगण से रातमें लाभ बताना। जगण रगण से दिन में हानि। सगण तगण से रात में हानि बताना। दिनका अर्थ कृष्ण पक्ष है रात का शुक्ल पक्ष में लाभ कहना॥ इति॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ गर्भ विचार चक्रं।

यथा कश्चित्पृच्छति अस्याः पुत्रोभविष्यति वापुत्रिका। तदा स्त्री संज्ञकैर्गणकन्यां प्रवेदत्। पुरुष संज्ञकैश्चपुत्रं। नपुंसकान्नपुंसकम्॥

म	य	र	स	त	ज	भ	म
कन्या	पुत्र	पुत्र	नपुंसक	नपुंसक	पुत्र	कन्या	पुत्र

भाषार्थ—अब गर्भवती के क्या होगा इसका विचार लिखते हैं। जैसे कोई पूछता हो कि इस स्त्री के पुत्र होगा अथवा पुत्री तषस्त्री संज्ञक गणों से कन्या कहे! और पुरुष संज्ञकों से पुत्र। और नपुंसक गण उसके बोलने के वाक्य में हों तो नपुंसक—हीजड़ा हो ऐसा उत्तर देना। इस में यह विचार है कि पहिले ही गण से उत्तर देना।

अथ धातु प्रश्न।

तत्रादौधाम्याधाम्यविचारः। रजाभ्याधाम्यः सनाभ्यां ह्यर्द्धधाम्य। भयमतेभ्योऽधाम्यः॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

म	य	र	स	त	ज	भ	न
मृत्तिका पाषाण हरिताल	पुखराज	लाल	अंजन नीलम सुरमा	मर्कत मैनसिल	रत्नकणियां	चांदीरांग	मूंगा गेरू

म. भ. र. जे. भ्यो. भूषणम् । यसते-भ्योपात्रम् । नेन नाणकम् ॥

भाषार्थ—पृच्छक जब यह पूछै कि हमारे मन में कैसी धातु है वा खोई गईहै । तब मगण भगण रगण जगण इनसे गहना बताना । यगण, सगण. तगण. से बरतन बताना. नगण से धातुका टुकडा कहना ।

अथाग्य धातु चक्रम् ।

म	य	र	स	त	ज	भ	न
सोना	रूपा पीतल	सोना	जस्त	लोहा	सोना तांबा	चांदी रांग	कांसा

इति धातु प्रकरणम् ।

—(०)—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीव चक्रम् ।

म	य	रं	स	त	ज	भ	न
जरायुज	उद्भिद् जरायुज	स्वेदज	अंडज	अंडज	जरायुज	स्वेदज	जरायुज
चतुष्पद् ह्रस्व	द्विपद्दीर्घ	द्विपद्ह्रस्व	पक्षी ह्रस्व	श्वापद् छोटा	द्विपद्दीर्घ	चतुष्पद् ह्रस्व	दीर्घ द्विप- बड़ा
स्त्री. पुरुष. पौत्र	ब्राह्मण	क्षत्रिय	निषादकाल हरित	सर्पादि कृष्ण	क्षत्रिय	वैश्य जल जंतु	शूद्र वैश्य नील

अधुना जीव प्रश्नः । तत्रचतुर्विधाजीवाः स्वेदजोद्भिद अंडज जरायुज भेदात् ।

भाषार्थ—अब जीव प्रश्न का विचार ऊपर के अनुसार करना चाहिये। इसमें चार प्रकार के जीव संसार में हैं जो पसीने से उत्पन्न होते हैं, और जो बनस्पति घास बृक्ष, जो अंडों से होतेहैं। और जो मनुष्यादिक जेर में लिपटे पशु आदि हैं ऐसे चार प्रकार के भेद से जानों।

अवस्था चक्रम् ।

म	य	र	स	त	ज	भ	न
बाल	वृद्ध	कुमार	युवा	मृत	युवा	बाल	युवा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीव प्रश्ने केनचित्संपृच्छंते मम मन
सि कीदृशो जीवोस्ति तदा चतुर्भिश्चक्रै
रुत्तरं देयम् ॥

। ऽ ऽ

यथा भाषायां (कहो जी) इति केन
चित कथितम् । उक्तशब्दे यगणोस्ति
तस्य जातिर्ब्राह्मणः । बृद्धावस्था । गौरव
र्णः अतिदीर्घः एवमुत्तरं दातव्यम् ।
इति वर्ण तथा जाति विचारः ॥

भाषार्थ—कोई जीव प्रश्न पूछता है । कि मेरे मनमें कैसा जीव है । तब पूर्वोक्त चार कोष्ट के यंत्र से उत्तर देना । जैसे किसी ने पूछा (कहोजी) ऐसा भाषा शब्द में एक लघु दो गुरु अक्षर का यगण है, उसकी ब्राह्मण जाति है और बूढ़ा है, गोरा रंग और बहुत लंबा शरीर । ऐसा उत्तर दैना ॥

॥ विदेश गतस्य विचारः ॥

आयाति यगणे शीघ्रं तथैव मगणे
स्थितः । प्रयाति सगणे ऽन्यत्र रेनहा
नौमृतश्चतात्जगणेरोगसंयुक्तोमेनरोगा
द्विनिसृतःनगणेनसुखंशेतेविदेशस्थःसदा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुमान् । मयाभ्यां सुख संपत्ति रसाभ्यां ज्वर पीडितः ॥

॥ परदेश गये का विचारः॥

भाषार्थ—यदि पूछने वाले के वाक्य में यगण हो तो परदेशी जल्दी आवै मगण हो तो वहां ही ठहरा हुआ है सगण होतो वहां से भी आगे चला गया कहना रगण से हानिमें है तगण हो तो मरगया ऐसा कहना जगण होतो रोग युक्त है भगण हो तो रोग से परदेशी छुटगया, नगण हो तो सुख में परदेशी सोता है मगण यगण से सुखी और धन से युक्त कहना। यदि रगण सगण साथ हो तो परदेशी को ज्वर से पीडित कहना।

॥ अथ रोगिणो रोग विचारः ॥

मत्ताभ्यां केशेषु रोगम् । जमाभ्यां रक्ते रोगम् द्वाभ्यां मगणाभ्यां अस्थनि रोगम् । मजाभ्यां मास रोगम् । भया त्वचि रोगम् । रजाभ्यां मेदे रोगम् । मेनवसायां रोगम् । येन शुक्रे । जेन अस्थिन रोगम् । रेनमज्जायाम् । भेनरक्ते सेन त्वचि । नेन स्नायुषु ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब रोगी के रोग का विचार करते हैं

भाषार्थ—जब पृच्छक पूछे कि रोगी के किस स्थान में रोग है तब ऐसा उत्तर देना। मगण तगण से वालों में रोग कहना। जगण मगण से लहू में रोग बताना। दो मगणों से हड्डी में रोग। म० ज० से मांस में रोग। म० य० से चर्ममें रोग। र० ज० से मेदा में रोग। मगण से वसामें रोग। यगण से वीर्य में रोग। जगण से हड्डी में रोग। रगणसे मज्जा रोग। सगण से रक्त में रोग। सगण से त्वचा में रोग। नगण से नाडियों में रोग बताना॥ इति॥

अथ साध्याऽसाध्य विचारः॥

तेन असाध्यः। सेन कष्ट साध्यः।
रेन अति कष्ट साध्यः। येन साध्यः।
मेन साध्यः। जेन कष्ट साध्यः। भेनसा
ध्यः। नेन सुख साध्यः। इति॥

भाषार्थ—अब रोगी का साध्य असाध्य बिचार यों है। तगण से असाध्य रोग। सगण से कष्ट साध्य। रगण से वहुत कष्ट साध्य है। यगण से साध्य मगण से साध्य। जगण से कष्ट साध्य। भगण से साध्य। नगण से सुख साध्य रोग है ऐसा कहना॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अस्य रोगिणो मृत्यु र्भविष्यति वा जीवनम् । इति प्रश्न रसतजेभ्यो मृत्युं वदेत् मन भयेभ्यो जीवनम् ॥ इति ॥

भाषार्थ—कोई पूछे इस रोगी की मृत्यु होगी कि जीवेगा । इस प्रश्न के उत्तर में रगण, सगण, तगण जगण, से मरेगा ऐसा कहना । और मगण, नगण, भगण, यगण, से जीवेगा । ऐसा कहना ॥ इति ॥

अथ कश्चित्पृच्छति मदीया स्थिति रत्र भविष्यति वा इतो गमनं भविता । तदा मतनेभ्यो स्थितिः । य र स ज भेभ्यो गमनं ब्रूयात् ॥ इति ॥

भाषार्थ—अब कोई पूछताहै कि मेरी स्थितियहां होगी कि यहां से गमन होगा ॥ तब म, त, न, से-ठहरोगे । य, र, स, ज, भ, से- जाओगे ऐसा कहना

॥ अथ जय पराजय विचारः ॥

कश्चिदा गत्यैवं ब्रूयान्मे जयः वा पराजयो भविष्यति ॥ तत्रादौ अयंविचारः कर्त्तव्यः । प्रश्न कर्ता यायी वा स्थायीति अनुयोग कर्ता यायी चेत तदा मन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भयेभ्य स्तस्यपराजयः । रसतजेभ्यो अ-यः । जयः । यदिचेत पृच्छा कर्त्ता स्थायी तदा रसतजेभ्य स्तस्य पराजयः मनभयेभ्यो जयः ॥ इति जय पराजय विचारः ॥

भाषार्थ—अब मुकदमे में हारहोगी वा जीत उसका विचार करते हैं ॥ कोई आकर ऐसे बोले कि मेरी हार होगी वा जीत वहां पहिले यह विचार करना योग्य है, कि प्रश्न पूछने वाला यायी (मुद्दई) है वा स्थायी (मुद्दआलह) है । पूछने वाला यायी हो तब म० न० भ० य० से उसकी हार कहनी । र० स० त० ज० से जीत ॥ यदि पूछने वाला स्थायी हो तब र.स.त.ज. से उसकी हार कहनी म.न. भ.य. से–जीत ॥ इति ॥

अथ मूल प्रश्न विचारः ।

मूले प्रश्न वक्ता इदं प्रेक्षणं कुर्यात् ।

मूळ प्रश्नमें प्रश्न कहने वाला पहिले यह देखे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

म	न	भ	स	ज	य
मूल	स्कन्ध	त्वचा	पत्र	पुष्प	फल

भ	र	म	त	य	स
श्वेत	रक्त	पीत	कृष्ण	चित्र	हरितं नील

काश्चित् पृच्छति मया किं भक्षितम् वा किं भक्षयिष्यामि । तदा पूर्वोक्तेन चक्रेणोत्तरं देयम् मन भये भक्ष्यम् । रसतजैर भक्ष्यम् ॥ इति मूलप्रश्नः ।

भाषार्थ—कोई पूछे कि मैंने क्या खाया है अथवा क्या खाऊंगा तब पहिले कहे हुए चक्र से उत्तर देना । यदि म० न० भ० य० हो तो भक्षण के योग्य पदार्थ खाये है र० स० त० ज० से भक्ष्य अच्छे २ भोजन खाये है वा खाओगे ॥ इत्यादि विचार मूल में है ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ अथान्त ४ करण चक्रम् ॥

विष्णुः चं—मनः—भ—	ब्रह्मा बृ—बुद्धिः—म—
शक्तिः बु०—चित्तम्—स—	रुद्रः म०—अहंकार—र—

॥ स्वादु शुष्क आर्द्रादि चक्रम् ॥

म	य	र	स	त	ज	भ	न	गणाः
आर्द्र	आर्द्र	शुष्क	शुष्क	शुष्क	शुष्क	आर्द्र	आर्द्र	शुष्कादि
षट्विध	मिष्ट	तिक्त	अम्ल	कटु	तिक्तमधुर	मधुर	मधुर	स्वादु
शीत-गरम	शीत	उष्ण	शीत-गरम	बासी	शीत-गरम	शीत	शीत-गरम	शीतोष्णादि
पिंड	पिंड	स्फुटित	स्फुटित	कण	स्फुटित	पिंड	पिंड	पिंड वास्फुटितं
मूलकंवल ककड़ी आदि	फल	जमीकन्द आदि	त्वक् कद्दू आदि	फोग आदि	पुष्प कचनार आदि	पत्रशाक	स्कन्ध	मूलादि
पीत	श्वेत	रक्त	हरित	कृष्ण	ईषत् रक्त	श्वेत	पीत	रंगादि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मनसा सङ्कल्प विकल्पयोश्चिन्तनम् बुद्धया पदार्थ निश्चय चिन्ता। चित्तेना नु सन्धानम्। अहंकारेण इदं कार्यं कृतं इदं करिष्ये। एताः अन्तः करण वृत्तयः

भाषार्थ—ऊपर जो चार दल का अन्तः करण चक्र लिखा है उससे प्रश्न कहना वेदान्त शास्त्र का मत है॥ इस चक्र की चार वृत्ति=स्वभाव है मन से संकल्प विकल्प की चिन्ता अर्थात् यह काम इस प्रकार है वा ऐसे। जैसे चांद की चांदनी में पडीहुई रस्सी में सर्प की भांति कि यह सांपहै वा रस्सी ऐसा बिचार मनका धर्म है। बुद्धिसे निश्चय सत्य ज्ञान होता है जैसे यह रस्सी ही है सांप नहीं। चित्त से अनुसंधान किया जाता है अर्थात् विचार जितनी देर सोचने में लगी। अहंकार से यह काम किया—और मैं यह करूंगा॥ ये चार स्वभाव अंतः करणके हैं।

❋ इति ❋

मनसि दुखम्	बुद्धि भ्रमः
म० र० म०	म० र० म०
स० र स०	र० र० र०
सुख इच्छा	अतिक्रोध

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यात्रा चिन्ता	बुद्धि वृद्धि चिंता
स० स० स०	स० स० स०
भ० स० भ०	र० स० र०
दूर गमन चिंता	मित्र चिंता

यश लाभ	धन सुख इच्छा
भ० न० भ०	म० न० म०
स० न० स०	र० न० र०
यात्रा से सुख इच्छा	धन कब मिले

ज्ञान इच्छा	धर्म इच्छा
भ० त० भ०	भ० त० म०
स० त० स०	र० त० र०
सत्संग	रोग शांति

आधिः	मंद बुद्धि
भ० ज० भ०	म० ज० म०
स० ज० स०	र० ज० र०
संचय इच्छा	अहंकार महत्व

संतान सुख इच्छा	संतान
भ० य० भ०	म० य० म०
स० य० स०	र० य० र०
देव लाभ चिंता	पुत्र, कब होय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धन चिंता	लक्ष्मी
स० म० भ०	म० म० म०
स० म० स०	र० म० र०
संचय चिंता	वृद्धत्व इच्छा

मनोद्वेग	काव्यरचना
भ० भ० भ०	म० म० र०
स० भ० स०	र० भ० र०
आंगत रक्षा	उन्नति इच्छा

एव मेवविधे श्चतुषष्ठि श्चक्राणि भवन्ति

भाषार्थ—ऐसे ही चौंसट चक्र होते हैं जैसे पूर्वोक्त आठ हैं ॥

प्रश्नकर्ता यस्यां दिशिस्थितः तस्या अपि गण ग्रहणमूकर्त्तव्यम्। तस्माद्गणा दपिफलं वाच्यम्

भाषार्थ—पूछने वाला जिसदिशामें आकर बैठे उस का भी गण ग्रहण करना चाहिये। उस गण से भी फल कहना ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ दिशा गण चक्र ॥

म	य	र	स	त	ज	भ	न
पूर्व	पश्चिम	अग्नि कोण	वायव्य कोण	ईशान कोण	ईशान	दक्षिण	नैऋत

अथ विविध प्रश्नाः । यराभ्यां धातु प्रश्नः । मराभ्यां धातु प्रश्नः

भाषार्थ—अब नाना प्रकार के प्रश्न कहे जाते हैं यगण रगण से धातु प्रश्नः । मगण रगण से भी धातु प्रश्न कहना ॥

॥ मैत्री विरोध चक्रम् ॥

य० र०	स० र०	भ० ज०	म०ज०	त०
विरोधः	मैत्री	विरोधः	मैत्री	अविरोधः

॥ अथदग्धाक्षराणि ॥

ह	ज	घ	न	ख	भ	घ	र

एतेषामष्टानां आदावुच्चारणात्कार्यं नाशो वक्तव्यः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाषार्थ—प्रश्न कर्ता के वचन में ये आठ अक्षर बचन के आदिमें आवें तो उसका कार्य नाश होजाय ऐसा कहना ॥ जैसे किसी ने कहा (हमारा कार्य कैसा होगा) इस बचन के आदिमें दग्ध अक्षर(ह) कार है । इसमें उसे कहना कि तुम्हारा जीव प्रश्न है परन्तु वह सिद्ध न होगा बीमार हो तो कहना मर जायगा रोगी होतो कहदो अभी रोग नहीं हटेगा ॥

॥ अथ व्यापार प्रश्नः ॥

यदाकश्चिदागत्यएवंपृच्छेत्अस्मात् कीदृग्व्यापारेलाभो भविष्यति। तदामेन अन्नादिनायेनरसेन । रेनधातुना । सेन तुषैर्वातुलादिना। दूरदेशेतन्तुभिरित्यर्थः। तेनवाण्यावागव्यापारेण यथा भाषायां (दलाल) पदवाच्येन । अथवाप्राड्वि वाक (वकील) व्यवसायेन जेनधातुना। भेनौषधिभिः नेनस्थित्यालाभंवदेत् ।

॥ इति ॥

॥ अब व्यापारप्रश्न का विचार है ॥

भाषार्थ—जब कोई आकर ऐसे पूछे हमको कैसे व्यापारमें लाभ होगा । तब मगण से अन्नादि से लाभ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यगणसे रस गुडतेल कपास नमक आदि से । रगणसे धातु सोना चांदी कांसी पीतल तांवा रांग कांसी आदिसे । सगण से घास तिनका रुई परदेशमें ळकडी आदिके कृत्य से लाभ कहना ॥ तगण से वाणी के व्यापार से जैसे [दलाळी] करनेवा [विकाळतसे] जगण से धातु से । मगण से औषधि वैद्यक विद्या से नगण से घर बैठे लाभ हो ॥ इति ॥

यदि कश्चित्पृच्छति अमुक वस्तु विक्रयं मयाकरणीयमवान करणीयम् । तदामयाभ्यां विक्रयंकुरु इत्युत्तरं तस्मै-देयम् । अन्यैश्चमा कुरु इति ब्रूयात् ॥

भाषार्थ—अब कोई पूछता है फलानी वस्तु को मैं बेचूं वा न बेचूं । तव मगण यगण से वेचदे ऐसा उत्तर देना चाहिये । और गणों से मत वेचो ऐसा कहे ॥

अथ कश्चित्पृच्छतिकस्मिन् मासि महर्घ्यंवासमर्घ्यं भविष्यति तदावर्तमा-न मासिप्रथमो गणःस्थाप्यः । द्वितीये द्वितीयः । तृतीये तृतीयः एवमेवाग्रेपि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ चक्रम् ॥

र	ज	स	त	य	भ	म	न
महर्घ्य मंहगा	महर्घ्य महंगा	विदेश महर्घ्य पर देशमें महंगा	स्वदेश महर्घ्य अपने देशमें मंहगा	समर्घ्य सस्ता	समान	समान	समान

भाषार्थ–अब कोई पूछे कि किसमास में मँहगा नाज वा सस्ता होगा। तब बर्तमान मासमें पहला गण और दूसरे में दूसरा तीसरे में तीसरा ऐसेही गण स्थापन करै गण चक्र के अनुसार फलदेख उत्तरदे।

काश्चित्पृच्छा कर्ता पृच्छति ममकस्य गृहस्य दोषोस्ति तदा ऽनेन चक्रेणोत्तरं दद्यात् ॥

सू	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	रा० के०
सूज	भ०	र०	स०	म०	य०	न०	त०

प्रश्नाक्षरेषु जगणश्चेत्सूर्य दानम् भेन चंद्र दानम्। रेन भौमदोषःभौमदानम्। एवं सर्वेषां वोध्यम् ॥

भाषार्थ–कोई पूछने वाला पूछे मेरे किसग्रह का दोष है तब इस उपरोक्त चक्रसे उत्तरदे। प्रश्न के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अक्षरों में जगण होतो सूरज का दान बताना उससे रोगशान्ति हो। भगण से चन्द्रमा का दान। रगण से मंगल का दोष केडा है इस से मंगल का दान बताना उसके करने से शान्ति होगी ऐसेही जिसगण के ऊपर जो ग्रहहै वही उसका स्वामी जानों उसके अनुसार फलदान कहना ॥

॥ लग्न चक्रम् ॥

१	२	३	४	५	६
८	७	९	भ०	ज०	१२
र०	य०	स०	१०न	११ त०	म०

भाषार्थ-लग्नों के स्वामी गणों से लग्न निश्चय होते हैं ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ बलाऽबल चक्रम् ॥

ज०	भ०	ज०	भ०	ज०	भ०	ज०	भ०	ज०	भ०	ज०	भ०
दिने दिनमें	रात्रौ रात में	मध्याह्ने दुपहर	अर्द्ध रात्रौ आधी रात में	कृष्ण पक्षे अंधेरे पाख	शुक्ल पक्षे चांदने पाख	उत्तरायणे	दक्षिणायने	दक्षिणांशे दाक्षिण्य	वैश्यांशे	पुरुषांशे	वामांशे

सन्धि चक्रम्

भ० ज०	प्रातः काले
ज० भ०	मध्याह्ने
ज० भ०	सायम्
भ० ज०	निशायें

तिथि चक्रम्

१ द	६ र	११ भ०
२ य	७ भ्र	१२ स०
३ भ	८ ज	१३ नं०
४ नं०	९ भ०	१४ ज० १५ भ०
५ र०	१० ज०	३० ज०

बार चक्रम्

सू०	चं०	भं०	बु०	बृ०	शु०	श०
ज० न०	भ०	र०	भ० स०	त० भ०	य०	स०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऋतुषु बलवन्तो गणाः ।

११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
वसन्त म०		ग्रीष्म य०		प्रावृट् र०		वर्षा स०		शरद् भ०		हेमंत न०	
फाल्गुन	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशिर	पौष	माघ
त०	र०	स०	स०	य०	य०	स०	य०	स०	स०	र०	त०
न०	न०			ज०	ज०			भ०	भ०		स०

नक्षत्र गण चक्रम् ।

म	य	र	ज	स	त	भ	न
अ०	अ०	कृ०	पुन	मू०	म०	मृ०	ध०
रो०	श०	पुष्य०	चित्रा	पूर्वा	उत्तरा	ध०	उत्तरा
रे०	पूर्वाषा०	श्ले०	ध०	भाद्र	फाल्गु		भाद्र
ऽ	उत्तरा	म०	०	पद	नी०		पद
॰		पू०	०		हस्त		
०		स्वा०	०		ऽनु		
		वि०	०		०		

अथान्य प्रकारेण गण ह ण विधि ।

सर्वदा अर्द्ध निशाया इष्टपंच दश १५ घो ाद्वार प्रवृत्ति भवति स एव सूर्योदयः । तत्सूर्योदयादेव शुक्ल, कृष्ण पक्षयोवार प्रवृतितो गणग्रहणम् कर्त्तव्यम् । अत्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रात्रि दिनात्मकं षष्ठी नाड्यात्मक मेव ग्राह्यम् ॥

भाषार्थ—अब और प्रकार से गण ग्रहण करने की बिधि कहते हैं। सदा आधीरात के मिश्रमानमें १५ जोडने से बार लगता है उसी को सूर्योदय कहते हैं। उस सूर्योदय से शुक्लपक्ष और कृष्ण पक्ष की बार प्रवृति से गण ग्रहण करना। इस में दिनरात ६० घडी का जानना ग्रहण करना ॥

शुक्लपक्ष सूर्य्य भौमके गण।

लाभ	गमन	श्रीः	दुःख	मृत्यु	प्रहर
म	य	र	स	त	१
त	म	य	र	स	२
स	त	म	य	र	३
र	स	त	म	य	४
य	र	स	त	म	५
१॥	१।	२	॥।	॥	घडी

चंद्र बुधके गण।

ला०	ग०	श्रीः	दुःख	मृ०	प्रहर
य	र	स	त	म	१
म	य	र	स	त	२
त	म	य	र	स	३
स	त	म	य	र	४
र	स	त	म	य	५
१॥	१।	२	॥।	॥	घडी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ बृहस्पति के गण ॥

लाभ	गमन	श्रीः	दुःख	मृ०	प्रहर
र	ल	तं	मं	य	१
य	र	स	त	म	२
म	य	र	स	तं	३
त	म	य	र	स	४
स	त	म	य	र	५
१||	१|	२	|||	||	घड़ी

शुक्र के गण ।

लाभ	गमन	श्रीः	दुःख	मृत्यु	प्रहर
स	त	म	य	र	१
र	स	त	म	य	२
य	र	स	त	म	३
म	य	र	स	त	४
त	म	य	र	स	५
१||	१|	२	|||	||	घड़ी

शनीश्चर के गण

ला०	गमन	श्रीः	दुःख	मृत्युः	प्रहर	
त	म	य	र	स	१	
स	त	म	य	र	२	
र	स	त	म	य	३	इति शुक्लपक्ष ग्रहस्य गणाः
य	र	स	त	म	४	
म	य	र	स	त	५	
१||	१|	२	|||	||	घड़ी	

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि चंद्रौ कृष्णपक्ष गणाः ।

ला०	ग०	श्री:	दुःख	मृ०	प्रहर
त	य	ल	म	र	१
य	ल	म	र	त	२
ल	म	र	त	य	३
म	र	त	य	ल	४
र	त	य	ल	म	५
१॥	१	२	॥।	॥	घड़ी

बुधे

ला०	गम०	श्री:	दुःख	मृ०	प्रहर
र	त	य	ल	म	१
त	य	ल	म	र	२
य	ल	म	र	त	३
ल	म	र	त	य	४
म	र	त	य	ल	५
१ः	१।	८	॥।	॥	घड़ी

बृहस्पति के गण

लाभ	गमन	श्री:	दुःख	मृ०	प्रहर
य	ल	म	र	त	१
ल	म	र	त	य	२
म	र	त	य	ल	३
र	त	य	ल	म	४
त	य	ल	म	र	५
१॥	१।	२	॥।	॥	घड़ी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्र के गण ।

लाभ	गमन	श्रीः	दुःख	मृत्यु	प्रहर
म	र	त	य	स	१
र	त	य	स	म	२
त	य	स	म	र	३
य	स	म	र	त	४
स	म	र	॥।	य	५
१॥	१।	२	।॥	॥	घडी

मंगल और सूर्यके गण ।

ला०	ग०	श्रीः	दुःख	मृ०	प्रहर
स	म	र	त	य	१
म	र	त	य	स	२
र	त	य	स	म	३
त	य	स	म	र	४
य	स	म	र	त	५
१॥	१।	२	।॥	॥	घडी

इति कृष्ण पक्षगणाः ।

अवधि चक्रम् ।

म	य	र	स	त	ज	भ	न
वर्ष	मास	दिन	पक्ष	वर्ष	दिन	मास	लगन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वारोदयात् षट् २ घटीषुगण ग्रहणं कर्तव्यम् । अहोरात्रयोर्दशपहरा भवंति । दशासु पूर्वोक्त चक्रैर्गण ग्रहणं कर्तव्यम् ॥

भाषार्थ—बार प्रवृत्ति से छःछःघडी में गण ग्रहण करना ॥ दिन रात के दशपहर हुए क्योंकि दश छ-क्के ६० इस प्रकार से दशपहरों में पहिले चक्रों से गण ग्रहण यों करना ॥ दोनों पखवारों के बार चक्र देखके फळ कहना ॥

लाभेच लाभंगमनेप्रयाणं राज्ये श्रियं स्वप्न मतीवदुःखं मृत्युर्विवादः कलहश्च पीडा गणैः फलंवै कवयो वदन्ति । लाभेच मासि गमने तुपक्षे राज्येदिनानां तृतयं सुषुप्तेः । षण्मास दुःखेषुचवर्षमृत्यौ ह्यवधि प्रमाणं कथितं द्विजेन्द्राः

भाषार्थ—लाभमें गण होतो लाभकहना । गमन में यात्रा । राज्य में लक्ष्मी प्राप्ति । स्वप्न में दुःख । मृत्यु में विवाद ळडाई पीडा कहना ॥ लाभ में एक मास अवधि । गमन में पाख । राज्य में कुछदिन स्वप्नमें अप्रमाण दुःखमें छःमास । मृत्यु में वर्ष की अवधि कहना हे ब्राह्मणों ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्षा विचारः

तभाभ्या मन्धकारमेवो!नभाभ्यांवायु श्चलिष्यति । जभा भ्यामपिवायुरेव । रभाभ्यां वायु चलनम् । सभाभ्यां वर्षण भवेत् ।। इति वर्षा विचारः ।।

भाषार्थ—अब पृच्छक पूछे कि वर्षा कब होगी तब तगण, भगण से आंधी मेह आवे । नगण भगण यदि वाक्यमें होतो हवा चलै । जगण से भी वायुचले । रगण भगण से भी वायु चले । ऐसा कहना । परन्तु सगण केपीछे भगण हो तो बहुत वर्षा हो इति ।

प्रश्णोमुख्यम् । वर्णोच्चारणहस्तदृष्टिर्दिग् बलान्येव दृष्ट्वा प्रश्नं वदेत् ।। इति ।।

भाषार्थ—प्रश्ण में मुख्य बात यह है कि पूछने वाला जैसे अक्षर बोले वे लिखले । हाथ को देखे कहां रक्खाहै । निगाह देखे कहां है । इन को देख के प्रश्न का उत्तर दे ।। इति ।।

उर्द्धावलोकने जीवो मूल भूम्यावलोकने । समावलोकने धातु रेवं प्रश्णस्य लक्षणम् ।।

भाषार्थ—किसी महात्मा ने यह बहुत ही सच्चा प्रमाण कहाहै । कि पूछने वाला पूछते समय ऊपरको पुतली चढाकर देखेतो जीव चिन्ता । पृथिवी की ओर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देखे तो मूल चिन्ता । यदिसम दृष्टि हो पूछै तो धातु चिंता जाननी ॥

मात्रा प्रस्तार से प्रश्न की अवधि ।

मात्र प्रस्तार

१	१	७	२१	१३	३७७
२	२	८	३४	१४	६१०
३	३	९	५५	१५	९८७
४	५	१०	८९	१६	१५९७
५	८	११	१४४	१७	२५८४
६	१३	१२	२३३	१८	४१८१

इस प्रस्तार से अवधि कहना—

इतिश्री हारितस्य गोत्रोत्पन्न जिला गुड़गांवां तहसील रिवाड़ी डांकखाना कंवाली ग्राम निवासी स्वामि हरदयालु शर्म्मा रचित प्रश्न कुतूहलः समाप्तः ॥

ग्रन्थ कर्त्ता की वंशावलि ।

स्वामी नन्दरामजी तत्पुत्र स्वामी लज्जारामजी तत्पुत्र कुशालीरामजी तत्पुत्र केवलरामजी तत्पुत्र स्वामीजी रामरक्षपालजी तत्पुत्र हरदयालुजी रचित ग्रंथ काणूडिया शासन पं० हरदयालुजी स्वामी के विद्यमान पुत्र मुरारीदत्त १ शिवचरण-वासुदेव ॥ ओं तत्सत्

॥ श्री ॥

सर्वतो भद्र देखने तथा फल बतलाने की रीति

इस चक्र के देखने की यह रीति है कि वर्त्तमान साल के तिथि पत्र में जो ग्रह जिस नक्षत्र पर हो प्रथम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसको उसी नक्षत्र पर रक्खे. पीछे वांई तथा दांई और सन्मुख चाल को देखें, जो राशी, तिथि, बार, स्वर, नक्षत्र नाम का प्रथम वर्ण विधजावे वही उस पुरुष के लिये शुभाऽशुभ फल का दाता है इसका फल फलित के श्लोकों में देखे, जो अशुभ ग्रह होय उसकी शांति करावे और जो शुभ ग्रह हों तो पुण्यकरे। जिससे कि अधिक शुभ फल के दाता हो। किमधिकम् ॥

पं० हरदायालु स्वामी

श्रीगणेशायनमः।

अथ भाषार्थ सहित

सर्वतो भद्र चक्र

व्यवस्था

—(*)—

कृत्तिकाभेस्थितः खेटअवृषंनन्दभद्रिकाम्
तुलांतं च द्विदेवं वै यमं नारायणं हरेत्

भाषार्थ

कृत्तिका पर स्थित ग्रह (अ वृष २ राशी नन्दा और भद्रा तिथि तुळ ७ राशी (त) और विशाखा, भरणी और श्रवण को बेधता है।

ब्रह्मभेसंस्थितः खेटोवयुगंऔतुकन्यकाम्
रंस्वाती मुस्वरं दस्र माभिजि हृत्तमाहरेत्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रोहिणी पर स्थिर ग्रह (व) वर्ण ३ राशी (औ) स्वर तथा कन्या राशी (र) स्वाति (उ) स्वर और अश्विनी तथा अजित् को बेधता है।

सौम्य संस्थोहन्ति खेटःककारंकर्कटंहरिम्
पंत्वाष्ट्रं चाऽस्वरं लंहि पौष्णार्क्षं वैश्वमंपुरः

मृगशीर्ष नक्षत्र पर स्थित ग्रह—ककार और कर्क सिंह राशी, पकार और चित्रा तथा अकार लकार और रेवती और आगे वैश्व—उत्तराषाढ नक्षत्र को बेधता है।

आर्द्रासंस्थः खगो हन्या ङ्लृकारं ट मर्क
भवाऽक्षरं लृचकारं वे ह्युत्तरा भाद्र मंपुरः

आर्द्रा पर स्थित ग्रह [ङ] [लृ] [ट] अक्षर और हस्त तथा [व] [लृ] [च] वर्ण और उत्तरा भाद्र को हननकर साम्हने के पूर्वाषाढ को बेधता है॥

आदित्य संस्थितः खेटो डमौ चोत्तर
फाल्गुनीं कंवृषा जौ दकारंच पूर्वा भाद्र
श्व निर्ऋतिम् ॥

पुनर्वसु पर संस्थित खेट [ड] [म] अक्षर और उत्तरा फाल्गुनी [क] वर्ण और बृष, एवं मेष राशी और [द) कार तथा पूर्वाभाद्रपद मूल नक्षत्र को बेधता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुष्यस्थ खेट ऊकारं भग मं इं युगं
हरेत् । ओस्वरं मीनराशींसंवारुणं ज्येष्ठ
मं हरेत् ॥

पुष्य नक्षत्र पर स्थित गृह [ऊ] वर्ण और पूर्वा फाल्गुनी और [इ] अक्षर मिथुन राशी तथा [ओ] स्वर मीनराशी (से) अक्षर और शत भिषा तथा ज्येष्ठा नक्षत्र को बेधता है ।

आश्लेषा संश्रितः खेटो मघां डं कर्कंद
क्रमात् । नन्दां रिक्तां हरेत्कुंभंगकारं
वसु मैत्रभम् ॥

श्लेषा पर बैठा हुआ ग्रह मघा नक्षत्र [ड] वर्ण और कर्क राशी तथा नन्दा १ । ६ । ११ और रिक्ता ४ । ६ । १४ तिथि और कुंभराशी [ग] अक्षर और धनिष्ठा तथा अनुराधा को बेधता है॥६

मघायां संस्थितः खेटो मकारं केसरिं
हरेत् । भद्राजयांतिथिं नक्रं खंविष्णुं
सार्प भंयमम ॥

मघापर स्थितः ग्रह म कार और सिंह राशी तथा भद्रा २-७-१२ और जया ३-८-१३ तिथि और मकर राशी [ख) अक्षर तथा श्रवण. श्लेषा और भरणी को बेधता है ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्वाफाल्गुनिगः खेटः टं कन्यां मस्व-
रं धनुः जकार मभिजिद्धन्या दृरवरं
पुष्य दस्त्रभे ।

पूर्वा फाल्गुनी में प्राप्त ग्रह (ट) अक्षर और कन्या राशी (अ) स्वर तथा धनराशी (ज) कार और अभिजित् नक्षत्र [ऊ] वर्ण और पुष्य तथा अश्विनी नक्षत्र को वेधता है ।

उत्तरर्क्षगतः खेटःपकारं तौलि वृश्चिकं
अवैश्च ऋक्षं मंडकार मदितिं रेवतीं हरेत् ॥

ऊपरले श्लोक में छंद भंग है सो जानना

उत्तरा फाल्गुनी पर आया हुआ ग्रह (प) और तथा (म] उत्तराषाढ (म] [ड] और पुनर्वसु और रेवती को हनन करता है ।

हस्तर्क्षगः खगोरंच एस्वरं याक्षरं हरे-
त् । अंबु भंटं लृस्वरं हंरुद्र मुत्तर भाद्र
भम् ॥

हस्तपर आया हुआ ग्रह (र] (य] पूर्वाषाढ [ट] [लृ] [ह] और आर्द्रा उत्तरा भाद्रपद को बेधता है ।

चित्रर्क्षगः खेचरस्तं नकारं नैऋतिं ह-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रेत् । पंकेसरि कुलीरोकं चन्द्रर्त्तं पूर्व भाद्र भम् ।

चित्रापर आया हुआ ग्रह [त] [न] और मूल [प] ५ । ४ राशी [ह] [क] तथा मृग शिर और पूर्वा भाद्रपद को बेधता है ।

स्वात्यृक्षगः खगो हन्ति ऋस्वरं ज्येष्ट भक्रमात् रंकन्या मौस्वरं युग्मं वं विधिं वारुणं हरेत् ।

स्वातिपर आया हुआ ग्रह [ऋ] स्वर ज्येष्ठा तथा [र] कन्या राशी,[औ) स्वर मिथुन और [व] तथा रोहिणी और शतभिषाको बेधता है ।

विशाखस्थः खगो हन्यान्मैत्र भं तं तुलां क्रमात् । भद्रां नन्दां वृषं राशिं अस्वरं वन्हि भं वसुम् ।

विशाखापर स्थितग्रह अनुराधा [त] तुलराशी २ । ७ । १२ भद्रा । १ । ६ । ११ नंदा तिथी और वृषराशी (अ) स्वर कृतिका औरधनिष्टा को बेधे है

अनुराधा स्थितः खेटो विशाखं नं अलिं जयां । रिक्ता तिथिं ऋयं हन्या छकारं याम्य सार्पभम् ॥

अनुराधापर स्थित ग्रह विशाखा (न) वृश्चिक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राशी ५ । ८ । १२ जया तिथि ४ । ९ । १४ रिक्ता और मेष राशी (ल) भरणी तथा श्लेषाको वेधताहै ॥

ज्येष्ठर्क्षगः खगो हन्ति यकारं चाहमः स्वरम् मीनं चकारं तुरगं ऋस्वरं स्वाति तिष्यभम् ॥

ज्येष्ठापर आया हुआ ग्रह (य) कार ९ राशी (अः) स्वर मीन राशी (च) तथा अश्विनी (ऋ) स्वाति और पुष्यको वेधता है ॥

मूलस्थः खेचरो हन्याद्भं नर्क्षं कुंभ राशिकम् । दकारं रेवतीं नं तं चित्रा मदिति मग्रगाम् ॥

मूलपर स्थित ग्रह (भ) १० राशी तथा ११ (द) रेवती (न) (त चित्रा आगे पुनर्वसु को वेधता है ॥

तोयर्क्षगो हन्ति खेटो जमैकारं सकारकं अहि बुंध्यं यऽमेचंच रकारं हस्त रुद्रभम् ॥ हस्त रुद्रभम् ॥

पूर्वाषाढपर वेठाहुआ ग्रह (ज) (ऐ) [स] उत्तरा भाद्रपद और [य] [ए] स्वर [र] हस्त और आर्द्राको वेधता है ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वैश्वर्क्षगः खेचरः खंगकारं पूर्वभाद्रभं ।
भकार मालि जूकं पंउत्तरां शशिभं हरेत् ॥

उत्तराषाढपर प्राप्तहुआ ग्रह (ख) (ग) पूर्वा भाद्रपर और (भ) ८।७। राशी (प) उत्तरा फाल्गुनी तथा मृगासिर को बेधता है ॥

अभिजित्स्थः ऽ खगो हन्ति ऋकारं
वारुणं पुनः । जं चापं अस्वरं कन्या
टकारं भग धातृभे ॥

अभिजित्पर बैठाहुआ ग्रह (ऋ) और शतभिषा (ज) ९ राशी (अ) कन्या (ट) पूर्वा फाल्गुनी तथा रोहिणी को बेधता है ॥

गोविन्दगः खमकरं जयां भद्रां तिथि
ग्रहः । सिंहं मकार पैत्र्यर्क्षं धनिष्ठां
हन्ति कृत्तिकाम् ॥

श्रवणपर स्थित ग्रह (ख) १० राशी जया ३ । ८ । १३ भद्रा २ । ७ । १२ और सिंह (म) तथा मघा धनिष्ठा और कृत्तिका को बेधता है ॥

वस्वर्क्षगः खगोहन्ति गकारं कुंभ
राशिकम् । रिक्तां नन्दां कुलीर डंसार्पं
विष्णु द्विदेव भम् ॥ २१ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धनिष्ठापर ठहरा हुआ ग्रह (ग) ११ राशी ४ । १ । १४ रिक्ता और १ । ६ ११ । नन्दा कर्कराशी (ड) श्लेषा श्रवण और विशाखा को वेधता है ॥

शततारर्क्षगः खेटो समीनं औस्वरं
गुगं हं पुष्पं हन्ति ऋकारं अभिजित्
स्वाति मग्रगाम् ॥

शतभिषापर चलता हुआ ग्रह (स) १२ राशी (ओ) स्वर मिथुन राशी [ह] पुष्य और [ऋ] अभिजित् स्वाति को वेधता हैं ॥

पूर्वा भाद्रस्थितः खेटो दंमेषं वृष भं
हरेत् । कमा दित्यगाऽच्चरं खं उत्तराषाढ
चित्र भे ॥

पूर्वा भाद्रपद पर स्थित ग्रह [द] १ । २ राशी और क पुनर्वसु [ग] [ख] अक्षर तथा उत्तरा षाढ और चित्राको बेधता है ॥

उत्तरा भाद्रगः खेटो चं लृं बं आर्द्रभं
क्रमात् । सकारं ऐस्वरं हन्ति जेतो यत्र
रविपुरः ॥

उत्तरा भाद्रपद पर आया हुआ ग्रह (च) (लृ)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ब) और आर्द्रातथा (स)(ए) स्वर (ज] और पूर्वाषाढ़ आगे हस्त को बेधता है ॥

रेवत्यां संस्थितःखेटो दं कुंभंनक रा-
शिकम् । भंनिर्ऋति लं अकारं चन्द्रर्क्षे
उत्तरां हरेत् ॥

रेवती पर संस्थित ग्रह (द) ११ । १० । राशी (म) मूळ और (ळ) (अ) मृगशिर तथा उत्तरा फाल्गुनी को बेधता है ॥

अश्विनी संस्थितः खेटः चंमींनं अः
स्वरं धनुः । याऽत्तरं ज्येष्ठ भं हंति उ-
कारं विध भं मगम् ॥

अश्विनी पर स्थित ग्रह (च) १२ राशी (अः) तथा ६ राशी और (य) अक्षर ज्येष्ठा (उ) कार रोहिणी और पूर्वा फाल्गुनी को वेधता है ॥

भरण्यां संस्थितः खेटो लकारं मेष
राशिकं । रिक्तांजयां अलि हन्यात् न
मंत्रं अग्नि पैतृभे ॥

भरणी पर स्थितग्रह (ल) १ राशी ४ । ९ । १४ रिक्ता ३ । ८ । १३ जया तथा ८ राशी (न) अनुराधा और कृत्तिका तथा मघा को बेधता है ॥ इति ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिग्वेधः

रौद्रादिमध्यमभचतुष्कवेधतो वेधमा दिशेत् क्रमशः घङछां । पणठां घफ ढां थ झ ञा मिति सर्वतो भद्रे ॥

अवपूर्व आदि अक्षरों का क्रम स्पष्टकर दिखाते हैं । आर्द्रा को आदि ले बीच के चार नक्षत्रों पर अर्थात् आर्द्रा १ हस्त २ पूर्वाषाढ ३ उत्तराभाद्रपद ४ इन में से यदि आर्द्रा पर जो ग्रह होय वह (क) (घ) (ङ) [छ] इन चारों अक्षरों को वेधता है । यदि हस्त पर कोई ग्रह हो वह (प) [ष] (ण) (ठ) को दक्षिण में वेधता है । पूर्वाषाढ पर स्थित ग्रह [भ] (ध) [फ] (ढ) को वेधता है । ऐसे ही उत्तराभाद्र पर जो ग्रह हो वह [द] (थ) (झ) [ञ) इन चारों को उत्तर में वेधता है ॥

कोणवेधः

प्रथमाग्नि भस्थ खेटो विध्येत्कोण स्थिता नच अतुरः । तिथिमपि पूर्णान शुभः क्रूरजवेधः शुभ शुभजः ॥

प्रथम नक्षत्र भरणी अग्नि नक्षत्र कृत्तिका इन दोनों पर कोई ग्रह बैठा होय तो ईसान कोण में स्थित

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चार स्वरों को वेधताहै। जैसे (अ) (उ) (लृ) (ओ) और ५।१०।१५। ३० पूर्णा तिथियों को वेधताहै। ऐसेहीं श्लेषा और मघापर स्थित ग्रह अग्नि कोणके चार (आ) (ऊ) (लॄ) (औ) और पूर्णाको वेधताहै। विशाखा तथा अनुराधा पर जोकोई ग्रहहो वह (इ) (ऋ) (ए) (अं) इन स्वरों को और पूर्णा तिथियों को वेधताहै। यदि श्रवण वा धनिष्ठा पर कोई ग्रह होतो (ई) ऋ) (ऐ) (अः) इन स्वरों को वायव्य कोणमें वेधता है कोणस्थ ग्रह पूर्णाको वेधताहै। कोण वेधमें वक्र शीघ्रादि ग्रहोंका क्रम कुछ अपेक्षित नहीं है क्रूर ग्रहोंका वेध शुभ नहींहै। शुभ ग्रहोंका वेध शुभहै॥

वक्रीदक्षं कर्णगत्याथवामं शीघ्रो विध्येदीक्ष्यते ऽग्रेसमस्तु। नित्यंवक्रो राहुकेतू रवीन्दू नित्यं शीघ्रौ ह्यन्यधो तुल्य रूपो॥

विशेषतः वक्री ग्रह तिरछी गातिसे दाहिनी और वेधताहै। और शीघ्र बांई ओर वेधताहै। समग्रह सामने वेधताहै। राहु केतु नित्य वक्री रहतेहैं। और सूर्य चन्द्रमा सदा शीघ्र गतिवालेहैं। इन चारों ग्रहों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की दृष्टि और वेध बराबर हैं। ये दृष्टि और वेधये समान हैं।

उदाहरण ॥

जैसे। रोहिणी पर वक्री ग्रह बैठाहोयतो दाहिनी ओर अश्विनी को वेधेगा। यदि रोहिणी पर शीघ्र ग्रहबैठेग। तौ स्वातिको वेधेगा। यदि रोहिणी पर सम ग्रह होगातौ अभिजित् विधेगा। भैआदि पांचोंका विचार भी ऐसेही जानो। इनमें राहुकेतु रवि चन्द्रमा सदा दृष्टि और वेध में तुल्य हैं।

उद्वेगार्थ बिनाशरोगमृतिदा विध्यंत
एकादयो वर्णेहानिरुडौ भ्रमोऽचितुरुजो
विद्धेतिथौ भीर पिराशौविघ्नतातिश्च पंच
सुमृतिर्विध्यनूज्ञ इज्यः सितः प्रज्ञांसर्वं
सुखंरतिं विदधतेवक्रा अतीष्टाइमे ॥

॥ अथ फलम् ॥

यदि एक से ले चार तक क्रूर ग्रह वेधते होंतो यह फल होता है। एक क्रूर ग्रह के वेधसे उद्वेग नाम मनका उच्चाटन। दो क्रूरों के वेधसे (अर्थ नाश) कोऽर्थ धननाश। तीन क्रूरों के वेधसे रोग। चारके वेधसे मृत्युहो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि शुभग्रहोंका वेधहोतो यथासंख्या । मन स्थिर १ द्रव्यागम २ रोगरहित ३ आयुवृद्धि ४ हो । यदि नामका प्रथमाक्षर पापग्रहसे विद्धहोतो हानिहो । नक्षत्र वेधसे चित्त भ्रम, और परदेश भ्रमणहो । और नामके प्रथमाक्षर में जो स्वरहो वह वा वर्ण स्वरका जो स्वरहो वह क्रूरविद्ध होतो रोग होय ॥ यदिजन्म तिथि क्रूरविद्ध होतो राजा, अग्नि ब्राह्मण चोर शस्त्र शत्रु आदिकों से भयहो यदि राशि क्रूरविद्ध होतो अनेक विघ्नहों । यदि अक्षर १ नक्षत्र २ स्वर ३ तिथि राशिये पांचों क्रूर विद्धहों तो मृत्युहोय ॥ अब शुभ ग्रहोंके वेधका फल कहतेहैं (ज्ञ) नाम बुधका वेधहोतो (प्रज्ञा) नाम बुद्धि बढे । (ईज्य) कोर्थ बृहस्पति के वेधसे सर्व सुखहों (सित) शुक्रका वेधहोतो प्रीति बढे । यदि चेत् बुधबृहस्पति शुक्र ये तीनों वक्री होकर वेधतेहो तो बहुतही शुभफलहो । और क्रूरग्रह वक्री होके वेधेंतो अत्यंत दुष्ट फलहो ॥

क्रूरा वक्रेऽती वदुष्टा रविश्च यद्रासौ सादिः स दिश्यास्तमेति । प्राच्यामीशा सास्थिताद्यः क्रमोयम् सर्वशास्त्रज्ञायतां बुद्धिमद्भिः ॥

क्रूर नाम पाप ग्रह वक्री होय तो बहुत ही दुष्ट

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फल के दाता हैं । चपुनः रवि नाम सूरज जिस दिशा की राशियों पर हो वह दिशा नक्षत्र अक्षर स्वर राशि तिथि वार सहित अस्त होजाती हैं ॥ जैसे ॥ वृषादि तीन राशियों पर सूर्य होय तो पूर्व दिशा में स्थित नक्षत्रादिक सब अस्त होजाते हैं । ऐसे ही दक्षिण, पश्चिम उत्तर का क्रमहै । और ईशान दिशा में स्थित जो स्वर हैं वे पूर्व में गिनने चाहिये । ऐसे ही अग्नि दिशा के स्वर दक्षिण के साथ नैऋत के पश्चिम के साथ वायव्य के उत्तर में जानने चाहियें ।

अस्ताशास्थाऽजाद्यैः क्रूर व्यधवत्
फलं वाच्यम् । उदिता शास्थैः सौम्य
व्यधइव फल मादिशे च्छ्रेष्टम् ।

अस्त हुई दिशा में स्थित जो स्वरादि अर्थात् स्वर १ वर्ण २ नक्षत्र ३ तिथि ४ वार ५ राशि ६ उनसे क्रूर ग्रहों का जो वेध हो वैसा ही फळ कहना और उदित जो दिशा उस में जो स्वरादिक को अर्थ स्वर वर्ण नक्षत्र तिथि वार राशि (सौम्य व्यधइव) कोर्थ शुभग्रह के वेधकी नाईं शुभ फल कहना । यहां बारका फल नहीं कहा है सो तिथि के फलकी नाईं जानना योग्य है ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यवहार राजसवो संग्रामधाम मंत्रेषु ।
ज्ञातेपि जन्मराशौ फलमुन्नेयंतुनाम
राशिवशात् ॥

नरपति में कहाहै । नक्षत्र अस्त होय तो रोग, वर्ण अस्त होयतो हानि स्वर अस्त होयतो शोक, राशि अस्त होयतो विघ्न, तिथि अस्त होय तो भयहोय । यदि पांचों अस्त होंयतो निश्चय मृत्युहोय ॥ नक्षत्र उदित होयतो पुष्टिहोय । वर्णका उदय होयतो लाभ होय । स्वर के उदय में सुखहो । राशिका उदय होयतो जीतहो तिथिका उदय होनेसे तेज वृद्धिहो । यदि पांचोंका उदय होयतो पद = औहदा मिले ॥ इह = इस सर्वतोभद्र चक्रमें जन्म का नक्षत्र पापग्रहसे विद्धहो तो हानि रोग कलह होय । और दशम नक्षत्र पाप विद्धहो तो मित्रादिकों से विरोध होय । सोलवां नक्षत्र पाप विद्धहोतो द्रव्य हानिहोय । और अठारवां ऋक्षभी पापविद्ध होतो द्रव्यकी हानि होय । और पच्चीसवां उडु पापविद्धहो तो सुखकी हानिहोय ॥ अब राजाके अर्थ फल कहते हैं । राजा के देशका नाम नक्षत्र तथा जाति, वा अभिषेक का नक्षत्र (ज्ञुराण) नाम पापविद्ध होयतो वही वही भयहोय । यथा देश का नाम नक्षत्र पापविद्ध होयतो देशका भयहो । और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आतिका (भ) पापविद्ध होयतो जातिका भयराजा को होय जिस नक्षत्रमें राज्याभिषेक हुआहो वह पाप विद्ध होतो राज्य हानि होय ॥ जन्मको नक्षत्र कर्म १० । १६ । १८ । २३ । २५ । ये छः नक्षत्र सब मनुष्यों के लिये बिचारने । और जाति, देश, अभिषेकके मिलाके राजाके लिये नौ नक्षत्रों से विचार करना ॥ ब्यवहार १ राजासेवा २ संग्राम ३ स्थान ४ मंत्र साधन में । जन्मराशी जानतेभी होंतोभी नमराशिसे फल कहना ॥ शुभम्

इति सर्वतो भद्रदीपः समाप्तः ॥

सम्पूर्णम्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उक्तञ्च नरपतौ ।

नक्षत्रेऽस्तेरुजोवर्णे हानिः शोकः स्वरेऽस्तगे राशौविघ्नंतिथौभीतिः पंचास्ते मरणं ध्रुवम् ॥ नक्षत्रेभ्युदितेपुष्टि वर्णेलाभः स्वरेसुखंराशौ जय स्तिथौतेजः ॥ पदाप्तिः पंचकोदये ॥

हानि रुक् कलहोपि पीडित इहस्या जन्म भेस्यान्वये १० कर्म्माऽसिद्धिरथोभिदाचय १६ मिते द्रव्य क्षयः स्पाज्जये १८ गोरे २३ देहरुजः शेर २५ सुख हती राज्ञोऽथदेशोड्डानिक्षुण्णे जात्यभि षेकयो रपि भयो स्तत्तद्भयं निर्दिशेत् ॥

॥ नरपतौ ॥

१   १०   १६   १८   २३

जन्मभं कर्म्म चाधानं विनाशं सामुदा

२५

यकम् । संघातिक मिदं धिष्णं षट्कं सार्व जनायकं, जातिदेशाभिषेकर्क्षं नवधिष्णानिभूपतेः । अतो राज्ञश्चर्क्षं नवचिन्त नीयम् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

❀ श्री ❀

प्रश्न कुतूहलसे प्रश्न कहने तथा फल बताने की रीति।

प्रश्न करने वाले महात्मा को यह चाहिये कि एक सलेट और कलम पास रख ले, पूछने वाला जो कोई आवै उस के मुख से जो वाक्य निकले उस को शुद्ध भाषा में तत्काल लिखले। प्रश्न कर्त्ता के वाक्य में जो गण हों उन से ही शुभाऽशुभ फल पुस्तकोक्त कहै॥ अथवा पूंछने वाला शरीर पर जहां हाथ रख कर पूछे उस से प्रश्न जाने. विराट् चक्र में सर्व अंगों के गण लिखे हैं। पूर्वोक्त रीति से फलित जैसा निकले वैसा कहै।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

* सर्वतो भद्र दीप चक्रम् *

					छ ङ घ					
	अ	कृ०	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	आ	
	म	उ	अ	व	क	ह	ड	ऊ	म	
	अ	ल	लृ	२	३	४	ॡ	म	म	
	रे	च	१	ओ	१।६ ११ २० मं	औ	५	ट	म	
अक्षय	उ	द	१२	४।९ १४ शु	१५। १०।५ श	२।७ २१ बु० चं	६	प	ह	षणढ
	प	स	११	अः	३।८ १३ गु	अं	७	र	चि	
	श	ग	ए	१०	९	८	ए	त	स्वा	
	ध	क्ष	ख	ज	भ	य	न	ऋ	वि	
	ई	श्र	ऽभि	उ	पू	मू	ज्ये	ऽनु	इ	
					ध फ ढ					

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुखसञ्चारक कम्पनी मथुराकी बनाई सरकारसे रजिस्ट्री की हुई दवाइयां जो बीस वर्षसे संसार में आजमाई जा चुकी हैं।

सुधासिन्धु

कफ, खांसी, दमा, जाड़ेका बुखार, हैजा, शूल, संग्रहणी, आंवदस्त, अतिसार, पेटका दर्द, कै होना, जी मिचलाना हाथ पैर और कनपटियोंके दर्द बच्चोंके हरे पीले दस्त [illegible] खांसी दूध पटकना [illegible] आदिकी अकसीर दवाई कीमत शीशी ॥) आठ आने १२ के ५।) रु.

[illegible]

आंखोंके सबके रोगोंकी एक मात्र उचित दवा है। [illegible] नहीं होती इसीको [illegible] के अर्कमें मिला देनेसे वो शीशी अर्क [illegible] तैयार होजाता है कीमत की शीशी ।) चार आना १२ शीशी मंगानेसे [illegible] मुफ्त भेजते हैं [illegible] १२शी. की वी.पी. ३।) [illegible] मुफ्त भेजते हैं। जिस में हमारे यहां का [illegible]

मंगानेका पता—

क्षेत्रपाल शर्मा मालिक
सुखसञ्चारक-कम्पनी मथुरा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जर्राही प्रकाश

चारों भाग।

यह ग्रंथ नये ढंगका हिन्दी भाषा में बना है। इसमें शरीरकी त्वचापर होने वाले फोड़े फुन्सी चोट आदि के घावों का इलाज, मरहम पट्टी चीर फाड़ आदिका वर्णन है इस पुस्तक के चार भाग किये हैं। ग्रंथके आदि में मनुष्य के कंकाल के चित्र अस्थि प्रदर्शक, मांसपेशी प्रदर्शक, स्नायुप्रदर्शक, हस्त, तलस्थ, अस्थि प्रदर्शक, पसली और उदर के चित्र फेफड़े का चित्र, सिर पर पट्टी बांधने का चित्र, आंखकी पट्टी, नाक की पट्टी छातीकी पट्टी, टूटे हाथकी पट्टी, अंगूठेकी पट्टी, उंगलीकी पट्टी, जांघकी पट्टी, कोहनी की पट्टी, टूटी हुई हड्डिवाले रोगियों को लेजाने अनेक उपयोगी चित्र दिये गये हैं। फिर प्रथम भागमें फोड़ों के चित्र ब्लाक बनवाकर छापे गये हैं और उनके साथ साथही उनके इलाज हैं। दूसरे भागमें चीरने फाड़ने में काम आनेवाले आयुर्वैदिक रीतिके अस्त्र शस्त्रों के चित्र, तीसरे भागमें उपदंश सम्बन्धी घाव सूजाक, प्रमेह, पठिया आदिके इलाज हैं, चौथे भागमें नत्र रोग सम्बन्धी इलाज लिखे हैं। पुस्तक बहुत मोटे चिकने कागज पर छापी गई है विलायती कपड़े की जिल्द मूल्य १॥) है

इलाजुलगुर्बाभाषा।

आप लोगों ने इस ग्रन्थका नाम तो सुनाही होगा। यथा नाम तथा गुणकी बात इसी में है, अमीर आदमी तो बड़े बड़े डाक्टर हकीम और वैद्यों को झट बुला सकता है, पर गरीब का ठिकाना नहीं इसमें कौड़ियों की कीमत के नुसखे हैं जो तीरकी तरह काम देते हैं पुस्तक बहुत मोटे चिकने तथा मोटे अक्षरों में बम्बई की छपी हुई है। विलायती कपड़े की जिल्द मूल्य १।) रु०

पुस्तक मिलनेका पता–

बाबू किशनलाल

बम्बईभूषण छापाखाना–मथुरा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh